श्री चौसठ ऋद्धि विधान

रचयिता

मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रस्तोता

बा.ब्र.संजय भैया मुरैना

- कृति : श्री चौसठ ऋद्धि विधान
- आशीर्वाद : आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज
- रचयिता : मुनि श्री १०८ सुव्रतसागरजी महाराज
- संयोजन : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना 94251-28817
- प्रसंग : आचार्यश्री का ५०वाँ मुनि दीक्षा संयम स्वर्ण महोत्सव एवं मुनिश्री का २०वाँ मुनि दीक्षा दिवस
- संस्करण : प्रथम, २०१८
- आवृत्ति : ११००
- लागत मूल्य : २०/-
- प्रकाशक : श्री जैनोदय विद्या समूह
- मुद्रक : विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगलाचरण

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।-४

मंगलमय मगल के कर्त्ता, नग्न दिगंबर संत रहे।
जीव हितैषी निर्ग्रंथों से, जिनशासन जयवंत रहे॥
जिनके रूप सदा मंगलमय, विघ्न अमंगल हरते हैं।
ऐसे ऋषियों साधुगणों को, हम तो नमोऽस्तु करते हैं॥१॥
विश्वशांति से आत्मशांति को, भोग विषय सुख जो छोड़े।
और कहें क्या अपने तन से, ममता-मूर्च्छा को तोड़े॥
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' वाली, श्रेष्ठ भावना अपनायी।
इसी साधना के प्रभाव से, अपनी आतम झलकायी॥२॥
स्वार्थ त्याग की यही साधना, ऋद्धि-सिद्ध विद्यायें दे।
चमत्कार फिलर अतिशय होते, निज की शुद्ध कलायें दे॥
ऐसे परम महाऋषियों से, धरा धर्म का रथ चलता।
इनकी महा कृपा को पाकर, भक्त जनों का पथ मिलता॥३॥
औषध मंत्र रसायन सेवा, ऋषियों से ही प्राप्त हुए।
रोग कठिन से कठिन इन्हीं की, करुणा पाये समाप्त हुए॥
कार्य कठिन से कठिन इन्हीं की दृष्टि से आसान हुए।
'सुव्रत' जग के भोग कहें क्या, चेतन तक के ज्ञान हुए॥४॥

(जोगीरासा)

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
ऋषि मुनियों को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥५॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री चौसठ ऋद्धि पूजन-विधान

स्थापना (दोहा)

भोग विषय सब त्याग कर, तप करते मुनिराज।
चौषठ-चौषठ ऋद्धियाँ, प्रकटाते ऋषिराज॥

(ज्ञानोदय)

इस संसार शरीर भोग के, जालों में सब उलझ रहे।
इन्हें त्याग जो करें तपस्या, वे ऋषिवर ही सुलझ रहे॥
चौषठ-चौषठ पूज ऋद्धियाँ, जिन में निज को हम खोजें।
आत्म प्रदेशों को गुंजित कर, करके नमोऽस्तु पद पूजें॥

(दोहा)

ऋद्धि-ऋद्धिधर पूज ने, करते नमोऽस्तु आज।
हे प्रभु! हम पर कर दया, करें हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनीन्द्र अत्र अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

सभी रसों का राजा जल हैं, जल बिन जीवन टिक न सके।
जल बिन कैसे पूजा होगी, जल बिन चेतन मिल न सके॥
सो प्रासुक जल रस लेकर हम, चेतन रस को खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जिनशासन की ऋद्धि देखकर, चमत्कार जग के भागें।
ऋद्धीश्वर की चरण धूल ले, अपने भाग्य कमल जागें।
चंदन जैसी शीतल चेतन, हम भी अपनी खोज रहे॥
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं...।

रंग विरंगे दुनियाँ वाले, आकर्षण को क्यों चाहें।
ऋद्धि धारियों की अर्चा से, मिलती शाश्वत सुख राहें॥
अपने घर में ऋद्धि-सिद्धि हो, अक्षय छाया खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

बाग बिना ना पुष्प खिलेंगे, पुष्प बिना क्या गंध मिले।
गंध बिना आनंद न मिलता, तो क्या परमानंद मिले॥
भाव भक्ति के पुष्प खिलाकर, आत्मपुष्प हम खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

स्वादु जनों का स्वाद छोड़कर, साधु तपस्यायें करते।
इसी साधना से दुनियाँ की, सभी वेदनायें हरते॥
फिर भी जिन रस कभी न छोड़ें, वही स्वाद हम खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

ऋषियों बिन फैला अंतरतम, सोचो! किसका दूर हुआ।
दीप आरती उनकी करने, अतः हृदय मजबूर हुआ॥
चेतनग्रह को रोशन करने, ज्ञान दीप हम खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

तपोधनों ने दौड़-धूप कर, दीप धूप को बचा रखा।
कर्मों के खेलों पर जयकर, चेतन घट को सजा रखा॥
बुद्धि भ्रष्ट हो नहीं हमारी, संत-मंत्र हम खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

कर्म रहित श्री सिद्ध अवस्था, त्याग तपस्या के फल हैं।
व्रत संयम बिन मोक्ष न मिलता, मिलते नरकों के बिल हैं॥
कर्मों के दुख विपाक हरके, महामोक्ष फल खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

नग्न दिगंबर ऋषियों के बिन, रत्नत्रय-जिनशासन क्या।
जिनशासन बिन शुद्धातम सुख, किसके पाया कहो सखा॥
अतः सभी दरबार छोड़कर, अनर्घ तीरथ खोज रहे।
चौषठ ऋद्धि ऋषिराजों को, करके नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

है चमत्कार को नमस्कार, जिनको अपना माना करते।
यह राग-आग है अपनों की, इनसे हम दुख पाया करते॥
फिर भी यह राग न छूट सका, सो चौसठ ऋद्धि मंत्र भजें।
हम करके नमोऽस्तु गुरुओं को, बस मुक्तिवधू के कंत बने॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतु:षष्टि ऋद्धिधारी मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावलि

(विष्णु)

(बुद्धि ऋद्धि के १८ भेद)

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, अवधिज्ञान पहला।
रूपी पुद्गल महास्कंध तक, जाने जो उजला॥
तीनों अवधिज्ञान पूजकर, आत्म चखें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं अवधि-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

ढाई दीप में मूर्त द्रव्य जो, जीवों के मन में।
ज्ञान मनःपर्यय वह जाने, रमता चेतन में॥
दोनों तरह मनःपर्यय भज, मोक्ष मिले आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं मनःपर्यय-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

घाति हरण कर बने केवली, अद्भुत ज्ञान गहे।
सभी द्रव्य गुण पर्यायों को, युगपत जान रहे॥
स्व-पर प्रकाशी केवल ज्ञानी, अर्हत् हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं केवल-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

कोष्ठों में ज्यों मिले धान्य हों, ऐसे द्रव्य मिले।
तो भी अलग-अलग जो जाने, निज सुख को मचले॥
कोष्ठबुद्धि को आत्म शुद्धि को, हम पूजें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं कोष्ठ-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

एक बीज से बढ़े फसल ज्यों, एक शब्द से ज्ञान।

संत तपस्या कर हो ज्ञानी, पा लेते निर्वाण॥
बीज बुद्धि की महा ऋद्धि से, मुक्ति मिले आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं बीज-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

गुरु से मात्र एक पद पढ़कर, श्रुत समझें पूरा।
पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि वह, धारें मुनि शूरा॥
सभी भेद इसके भज पायें, भेद ज्ञान आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

नर पशुओं के मिश्र वचन सुन, अलग-अलग बोलें।
संभिन्नस्रोतृ बुद्धि ऋद्धि धर, ज्ञान चक्षु खोलें॥
जड़ चेतन का बन्ध मिटाने, हम पूजें आहा॥
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं संभिन्नस्रोतृ-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

पर उपदेश बिना अपने से, होकर वैरागी।
करें तपस्या तो हो जाती, मुक्तिवधू रागी॥
यह प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि भज, ध्यानी हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

बन के नगन दिगम्बर मुनि जो, करें तपस्यायें।
सुरगुरु परमत सब पर जय कर, हरें समस्यायें॥
तत्त्वज्ञान वादित्व ऋद्धि से, हम पायें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं वादित्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

दसपूर्वों को ध्याकर तपसी, अन्तर्मुखी हुए।
तो विद्यायें दिव्य शक्तियाँ, आकर पाँव हुए॥
जिन विद्या से निज विद्या को, हम पूजें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं दशपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

चौदह पूर्वों के ज्ञानी हो, तजें मान ज्वाला।
तभी मुक्ति नत नयना होकर, कर ले वरमाला।
चौदह राजू उच्च पहुँचने, हम पूजें आहा॥
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥११॥

ॐ ह्रीं चौदह पूर्वित्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

अंग भौम आदिक ज्योतिष के, आठ निमित्तों से।
भविष्य में क्या होने वाला, कहते शब्दों से॥
यह अष्टांग निमित्त हम पूजें, उज्ज्वल हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्त-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

नव योजन सीमा के बाहर, स्पर्शन करना
फिर भी निज का स्पर्शन कर, आतम में रमना।
दूर स्पर्शत्व ऋद्धि भजें हम, छुएँ मुक्ति आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१३॥

ॐ ह्रीं दूरस्पर्श-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

नव योजन की मर्यादा से, बाहर रस चख लें।
शुद्धातम में लीन हुए तो, आतमरस चख लें॥
दूरास्वादन ऋद्धि भजें हम, मिले स्वरस आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१४॥

ॐ ह्रीं दूरस्वादित्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

नव योजन की सीमा से भी, बाह्य सूँघ लेते।
निज आतम के पुष्प खिला के, मोक्ष घूम लेते॥
भजें दूर घ्राणत्व ऋद्धि हम, लें स्वगंध आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१५॥

ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

सैतालीस हजार और दो, सौ त्रेसठ योजन।
इससे दूर दृश्य के दृष्टा, कर लें निजशोधन॥
ऋद्धि दूर दर्शित्व भजें हम, दर्शन हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१६॥

ॐ ह्रीं दूरदर्शित्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

बारह योजन के बाहर भी, सुनने की क्षमता।
दूरश्रवण की ऋद्धि प्राप्त कर, निज की उद्यमता॥
हम भक्तों की अर्जी सुनकर, तारो तो आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१७॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

बिना पढ़े ही सकल जिनागम, जो ऋषि खुद समझें।
कर्मों के सिद्धांत समझ के, जग में ना उलझें॥
ऋषिवर प्रज्ञाश्रमण हमें भी, प्रज्ञा दें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१८॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

(चारण ऋद्धि के ९ भेद)

नव प्रकार चारण ऋद्धि में, जल चारण पहले।
जल जीवों को कष्ट दिये बिन, जल पर संत चले॥
जल चारण की ऋद्धि पूजकर, प्यास मिटे आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥१९॥

ॐ ह्रीं जल-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

जंघा बल से धरती तल से, चउ अंगुल ऊँचे।
चाहें तो योजन बहु योजन, क्षण भर में पहुँचे॥
जंघाचारण ऋद्धि पूजकर, उन्नति हो आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२०॥

ॐ ह्रीं जंघा-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

नभ में चले किसी आसन से, जिन आज्ञा पालें।
भक्तों का कल्याण करें ऋषि, निज आतम ध्या लें॥
ऋद्धि नभश्चारण को भजकर, सिद्धासन आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२१॥

ॐ ह्रीं नभः-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

मकड़ी के जालों पर चलना, बिन बाधाओं के।
तन्तु न टूटे जन्तु न रूठे, मुनि ऋषिराजों से॥

ऋद्धि तन्तु चारण भजकर के, जन्तु सुखी आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२२॥

ॐ ह्रीं तन्तु-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

पुष्पों पर ऋषि कभी ना चलते, किंतु अगर चलते।
तो जीवों को दुख ना होता, कभी न मर सकते।
ऋद्धि पुष्प चारण को भजकर, पुष्प खिले आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२३॥

ॐ ह्रीं पुष्प-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

पत्रों पर ऋषियों को चलना, इष्ट नहीं होता।
अगर चले तो उन जीवों को, कष्ट नहीं होता॥
यही पत्रचारण को भजकर, मित्र बनें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥ २४॥

ॐ ह्रीं पत्र-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

बीजों पर चलकर जीवों को, अगर न कष्ट हुए।
ऋद्धि बीजचारण यह भजके, सुखिया भक्त हुए॥
मोक्षबीज पाने हम पूजें, बीज फले आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२५॥

ॐ ह्रीं बीज-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

श्रेणी पर चल श्रेणी माडें, किन्तु न जीव मरें।
श्रेणीचारण ऋद्धि यही भज, आतम भी निखरें॥
हम भी ऋषियों की श्रेणी में, आ जायें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२६॥

ॐ ह्रीं श्रेणी-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

अग्निशिखा पर चलने पर भी, मरे नहीं प्राणी।
फिर भी ध्यान अग्नि से ऋषिवर, बनते कल्याणी॥
ऋद्धि अग्निचारण को भजकर, कर्म जलें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२७॥

ॐ ह्रीं अग्नि-चारणऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

(विक्रिया ऋद्धि के ११ भेद)

ग्यारह विध की विक्रिया ऋद्धि, अणिमा है पहली।
परमाणु सी काया जिनकी, छिद्रों से निकली॥
अणिमा ऋद्धि हम भी भजकर, सूक्ष्म बनें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२८॥

ॐ ह्रीं अणिमा-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

महादेह मेरु जैसी कर, जग के कष्ट हरें।
विष्णुकुमार सरीखे ऋषिवर, महिमा रूप धरें।
महिमा ऋद्धि हम भी भजकर, महा बनें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥२९॥

ॐ ह्रीं महिमा-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

करें पवन सा हल्का तन फिर, हल्का करते मन।
आतम हल्का करके पाये, सुख का मोक्ष भवन॥
लघिमा ऋद्धि हम भी भजकर, लघु होवें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३०॥

ॐ ह्रीं लघिमा-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

मेरु से भी भारी अपनी, काया को करना।
ऐसी गरिमा पाकर हमको, आत्म मुक्त करना॥
गरिमा ऋद्धि हम भी भजकर, गुणी बनें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३१॥

ॐ ह्रीं गरिमा-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

भू पर रहकर सूरज चंदा, जो ऋषिवर छू लें।
आत्म गुणों में घुलें मिलें तो, मुक्ति चरण छू लें॥
प्राप्ति ऋद्धि को करके नमोऽस्तु भव समाप्ति आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३२॥

ॐ ह्रीं प्राप्ति-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

जल में थल सम थल में जल सम, जो ऋषि खेल सकें।
तरह-तरह की देह बना कर, भव की जेल तजें॥

भजें यही प्राकाम्य ऋद्धि हम, देह तजें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३३॥

ॐ ह्रीं प्राकाम्य-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

महातपस्वी महामनस्वी, सब जग को जीते।
निर्मोही सबका मन मोहें, निज रस को पीते॥
हम ईशत्व ऋद्धि को पूजें, ईश बनें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३४॥

ॐ ह्रीं ईशत्व-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तप का ऐसा प्रभाव हो कि, सब जग वश में हो।
पर ऋषिवर निज वश होते सो, ना पर वश में हो॥
वशित्व ऋद्धि को भजकर हम भी, निज वश हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३५॥

ॐ ह्रीं वशित्व-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

पर्वत चट्टानें भी जिनको, रोक नहीं पाते।
बिना खेद के बिना छेद के, संत पार जाते।
पूजें अप्रतिघात ऋद्धि हम, निर्बाधा आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३६॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघात-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

दीक्षा लेकर तप करके जो, हो जाते अदृश्य।
आतम के जो दृश्य देखकर, उज्ज्वल करें भविष्य॥
अंतर्धान ऋद्धि हम भजकर, शिष्य बनें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३७॥

ॐ ह्रीं अंतर्धान-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तप के प्रभाव से मनवांछित, तन का रूप करें।
कामरूपिणी इस विद्या से, दुख का कूप हरें॥
इसको हम भी करके नमोऽस्तु, काम तजें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३८॥

ॐ ह्रीं कामरूपित्व-विक्रियाऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

(तप ऋद्धि के ७ भेद)

तपो ऋद्धि के सात भेद में, प्रथम उग्र तप हों।
दीक्षा से समाधि तक बहुविध, जिसमें अनशन हों॥
उग्र भाव तज उग्र ऋिद्धि भज, मिले शांति आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥३९॥

ॐ ह्रीं उग्र-तपऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तरह-तरह उपवास करें पर, दुर्बल ना होते।
किन्तु देह दिन प्रतिदिन चमकें, पाप तिमिर खोते॥
ऋिद्धि दीप्ततप भज हम पायें, आत्म ज्योति आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४०॥

ॐ ह्रीं दीप्त-तपऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तप से भोजन यों सूखे ज्यों, तप्त लौह पर जल।
अतः नहीं मल मूत्र हुए सो, पायें मोक्षमहल॥
ऋिद्धि तप्ततप हम भी पूजें, शीतल हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४१॥

ॐ ह्रीं तप्त-तपऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

महा महा उपवास करें जो, सिंहनिष्क्रीडन से।
फिर भी त्रास नाली के ज्ञाता, मिलते चेतन से॥
यही महातप ऋद्धि भजें हम, मिले शान्ति आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४२॥

ॐ ह्रीं महा-तपऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

रोग व्यथा हो तन में फिर भी, घोर तपा करसी।
विश्वशांति करने को जिनकी, खूब कृपा बरसी॥
भजें घोरतप ऋिद्धि भक्त हम, हों निरोग आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४३॥

ॐ ह्रीं घोर-तपऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

सिंधु सुखा दें लोक पलट दें, तप बल के द्वारा।
किन्तु अहिंसक करें न यों सो, जग पूजे सारा॥
घोर पराक्रम ऋिद्धि भजें हम, ऊर्ध्व वसें आहा।

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४४॥

ॐ ह्रीं घोरपराक्रम-तपऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

दुनियाँ की नारी त्यागें पर, मुक्तिवधू रागी।
डिगा न सकते जगत प्रलोभन, जय हो! वैरागी।
अघोर ब्रह्मचर्य हम पूजें, मंगल हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४५॥

ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्व-तपऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

(बलऋद्धि के ३ भेद)

बल रिद्धि के तीन भेद में, प्रथम मनोबल है।
जिससे रिषि बस एक घड़ी में, जिनश्रुत को मथ लें॥
रिद्धि मनोबल भजकर हम हों, विजित मना आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४६॥

ॐ ह्रीं मन-बलऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

द्वादशांग को एक घड़ी में, जो पूरा पढ़ लें।
महातपस्वी इन ऋषियों के, चलो पैर पड़ लें॥
रिद्धि वचनबल भज कर होते, वचन सिद्ध आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४७॥

ॐ ह्रीं वचन-बलऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तप के प्रभाव से उँगली पर, लोक जमा लेवें।
कायोत्सर्ग वर्ष भर करके, मुक्ति रिझा लेवें॥
ऋद्धि कायबल भजकर हम भी, हों विदेह आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४८॥

ॐ ह्रीं काय-बलऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्य...।

(ओषधि रिद्धि के ८ भेद)

आठ भेद औषध ऋद्धि के, है आमर्ष प्रथम।
जिनका तन छू छूमंतर हों, रोग व्याधियाँ गम॥
आमर्ष औषधि को भजकर के, निज छू लें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥४९॥

ॐ ह्रीं आमर्ष-औषधऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

खेल्ल औषधि ॠिद्धिधर के, लार-नाक मल को।
इत्यादि छू पवन चले तो, हरे रोग दुख को॥
ऐसी ऋद्धि पूज-पूज हम, मल हर लें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५०॥

ॐ ह्रीं खेल्ल-औषधऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

ऋषि के तन के बाह्य मैल जो, तप से औषध हों।
जिनको छूकर टलें व्याधियाँ, सुख से प्रोषध हों॥
जल्ल औषधि भजकर तैरें, भव जल हम आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५१॥

ॐ ह्रीं जल्ल-औषधऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

दाँत कान आदिक मल तप से, औषध निश्चित हों।
इनको छूकर भक्त जनों के, कार्य सुनिश्चित हों॥
मल्ल औषधि भज हम जीतें, मोह मल्ल आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५२॥

ॐ ह्रीं मल्ल-औषधऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

ऋषि के मल मूत्रादिक तप से, दवा हुए आहा।
जिसको छूकर पवन चले तो, रोग करें स्वाहा॥
विप्रुष औषध ऋद्धि भजें हम, निर्मल हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५३॥

ॐ ह्रीं विप्रुष-औषधऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तपसी की संपूर्ण देह यह, जब औषध होती।
जिसको छू के पवन चले तो, रोग व्यथा खोती॥
सर्व औषधि ऋद्धि पूज हम, सर्व सुखी आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५४॥

ॐ ह्रीं सर्व-औषधऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तप से जिनकी वाणी अमृत, जैसी हो जाती।
जहर उतर जाते जिसको सुन, निज को चमकाती॥
मुख-निर्विष यह ऋद्धि पूजकर, जहर नसे आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५५॥

ॐ ह्रीं मुखनिर्विष-औषधऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

तप के कारण जिनकी नजरें अमृत हो जायें।
जहाँ पड़ें नजरें तो विष खुद, निर्विष हो जायें॥
दृष्टि निर्विष ऋद्धि भजें हम, निर्विकार आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५६॥

ॐ ह्रीं दृष्टि-निर्विषऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

(रस ऋद्धि के ६ भेद)

रस ऋद्धि के छह भेदों में, आशीर्विष पहला।
मर जा कहने पर मर जायें, कहें न करें भला॥
आशीर्विष को करके नमोऽस्तु, भला करें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५७॥

ॐ ह्रीं आशीर्विष-रसऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

कोप दृष्टि जिन पर कर देते, वो तत्काल मरें।
परम दयालु करें ना यों सो, हम त्रय काल भजें॥
दृष्टिर्विष गुरु हरें समस्या, सुख देवें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५८॥

ॐ ह्रीं दृष्टिर्विष-रसऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

अरस भोज्य कर-पात्रों में आ, तप से सरस हुए।
भोजन त्याग भजन करते ऋषि, सो हम चरण छुए॥
क्षीरस्रावि रस ऋद्धि पूजकर, क्षीरामृत आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥५९॥

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावि-रसऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

कटुक भोज्य भी पाणि पात्र में, तप से मधुर हुए।
भोजन रस के त्यागी ऋषिवर, आतम रसिक हुए॥
मधुस्रावी रस ऋद्धि पूजकर, निजरस हों आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥६०॥

ॐ ह्रीं मधुस्रावि-रसऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

सरस अरस सब भोज्य करों में, अमृत स्वाद झरे।
तप से ऋषि यह गुण पायें पर, निज रस चाह रहे॥
अमृतस्रावि ऋद्धि पूज कर, ज्ञानमृत आहा।

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥६१॥

ॐ ह्रीं अमृतस्त्रावि-रसऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

रूखा सूखा कटुक भोज्य भी, घृत सम हो तप से।
भोज्य रसों के त्यागी ऋषि को, हम खोजें कब से॥
सर्पिस्त्रावि ऋद्धि पूज हम, पुष्ट बनें अहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥६२॥

ॐ ह्रीं सर्पिस्त्रावि-रसऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

(अक्षीण ऋद्धि के २ भेद)

दो विध की अक्षीण ऋद्धि में, पहला यह कहता।
मुनि चौके में चक्रि सैन्य को, भोज्य न कम पड़ता॥
यह अक्षीण महानस ऋद्धि, हम पूजें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥६३॥

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

मुनि आसन पर चक्रि सैन्य, भी यदि चाहे रुकना।
तब तो सुख से सब रुक जायें, हम चाहें झुकना॥
यह अक्षीण महालय ऋद्धि, हम ध्यायें आहा।
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः, नमो नमः स्वाहा॥६४॥

ॐ ह्रीं अक्षीण-महालय ऋद्धिधारी मुनिभ्यो अर्घ्यं...।

(पंचम कालिक गुरु मुनि अर्घ्य)

(ज्ञानोदय)

महावीर के मुक्ति गमन के, पीछे बासठ सालों में।
गौतम-सुधर्म-जम्बू स्वामी, हुए पाँचवे कालों में॥
द्रव्य-भाव-नोकर्म नशाने, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वीरशासने द्विषष्टिवर्षमध्ये गौतम-सुधर्म-जम्बूस्वामि त्रयकेवलिभ्यो अर्घ्यं...।

तीन केवली प्रभु के पीछे, सौ वर्षों के शासन में।
विष्णु-नंदिमित्र-अपराजित-गोवर्धन जिनशासन में॥
भद्रबाहु सब श्रुत धारी को, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं त्रय केवली-उपरान्ते शतवर्षमध्ये विष्णु-नंदिमित्र-अपराजित-गोवर्धन- भद्रबाहु पंचश्रुत केवलिभ्यो अर्घ्यं...।

पाँच-पाँच श्रुत हुए केवली, फिर ग्यारह दस पूर्व धरा।
वर्ष एक सौ तेरासी में, विशाख आदिक मुनीश्वरा॥
हैं धरसेन अंत में उनको, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पंचश्रुतकेवलि-उपरान्ते विशाख-प्रौष्ठिल-क्षत्रिय-जय-नागसेन-सिद्धार्थ-वृतसेन-विजय-बुद्धिलिंग-अंगदेव-धरसेनादि एकादश-दशपूर्वधारक श्रुतकेवलिभ्यो अर्घ्यं...।

वर्ष एक सौ तेईस में फिर, ग्यारह अंगों के धारी।
नक्षत्रादिक पाँच हुए गुरु, जिनशासन के अधिकारी॥
आचार्यों की करके पूजा, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं एकादश-दशपूर्वधारक-उपरान्ते शताधिक त्रयोंविंशतिवर्ष मध्ये-नक्षत्र-जयपाल-पांडव-ध्रुवसेन-कंसादिक एकादशांग श्रुतधारक पंच मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पुनः तीन कम सौ वर्षों में, सुभद्र-यशोभद्र स्वामी।
भद्रबाहु लौहार्य चार गुरु, हुए आचारांग ज्ञानी॥
संयम और संयमी पूजें, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं एकादशांग क्षुतधारक-उपरान्ते त्र्यूनशत वर्ष मध्ये-सुभद्र-यशोभद्र-यशोबाहु (भद्रबाहु)-लौहार्यादि आचारांगधारक चतुः मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्ष एक सौ अष्टादश में, श्रुत के एकदेश ज्ञानी।
ऐलाचार्य माघनंदी गुरु, धरसेन पुष्पदन्त स्वामी॥
हुए भूतबलि सूरि भजें नित, करें नमोऽस्तु हम आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आचारांगधारक उपरान्ते शताधिक-अष्टादश वर्ष मध्ये ऐलाचार्य-माघनंदी - धरसने-पुष्पदंत-भूतबलि आदि एकादशांगधारक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

इस विध कुल छह सौ तेरासी, वर्षों में जो सन्त हुए।
क्रमशः क्रमशः हीन धरे श्रुत, उसके जो उपरान्त हुए॥
कुन्दकुन्द गुरु उमास्वामि फिर, समन्तभद्र शिवकोटि हुए।
पुनः शिवायम पूज्यपाद मुनि, ऐलाचार्य अमृतचंद हुए॥

वीरसेन जिनसेन नेमिचन्द्र, रामसेन जयसेन हुए।
अकलंक स्वामी बौद्ध जितारी, विद्यानंद मणिकनंद हुए॥
प्रभाचंद मुनि बासवचंदा, गुणभद्र वीरनंदि हुए।
मुनि आचार्य उपाध्यायों ने, सम्यग्ज्ञानी छंद छुए॥

फिर ईशा की सदी बीसवीं, वीर निर्वाणी पच्चीसों।
शांतिसागराचार्य हुए फिर, हुए वीर गुरु भक्ति सों॥
शिवसागर आचार्य हुए फिर, हुए ज्ञानसागर गुरुवर।
ज्ञानी ध्यानी विद्वानी ने, प्रभावना की जीवन भर॥

और अन्त में वृद्धदशा में, अद्वितीय मुनि दीक्षा दी।
विद्याधर से विद्यासागर, शिष्य बना श्रुत शिक्षा दी॥
फिर आचार्य बनाकर जिनको, समाधि तक के ज्ञान दिये।
वर्तमान के वर्धमान सम, हम सबको भगवान दिये॥

वर्तमान शासन में जितने, पुलाक वकुश निर्ग्रंथ हुए।
कुशील स्नातक पाँच तरह के, नग्न दिगंबर संत हुए॥
इन सबको हम साथ-साथ में, अलग-अलग पूजें आहा।
णमो लोए सव्व साहूणं जप, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

(दोहा)

ग्रंथ रहित हमको करें, हे गुरुवर निर्ग्रंथ।
हम भी शिवपंथी बनें, दिखला दो वह पंथ॥

ॐ ह्रीं एकादशांगधारक-उपरान्ते कुन्दकुन्द-विद्यासागरादि सर्वनिर्ग्रंथ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(शंभु)

मुनिराज बिना जिनशासन की, जिनधर्म धार तो बह न सके।
सो जैन दिगंबर अनुयायी तो, मुनियों के बिन रह न सके॥
ऋषिराजों की इस पूजा का, हम फल चाहें मुनि धर्म मिले।
हों नग्न दिगंबर पिछी कमण्डल, लेकर आतम धर्म मिले॥

(दोहा)

जिनशासन की शरण में, ऋषि मुनियों को पूज।

'सुव्रत' चाहे मोक्ष तक, गूँजे नमोऽस्तु गूँज॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल संबंधिनः सर्व मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

हृदय वसें ऋषिराज तो, खुले ज्ञान के नेत्र।
सो कहके जयमालिका, मिले मोक्ष का क्षेत्र॥

(चौपाई)

जय-जय-जय ऋषि संत महंता, जिन से जिनशासन जयवंता।
तारण-तरण जहाज सहारे, ऐसे हैं ऋषिराज हमारे॥१॥
आओ! इनकी कथा वाँच लें, छाया में हम आज नाँच लें।
इन जैसी पायें निज वस्तु, आओ! मिलकर करें नमोऽस्तु॥२॥
जब कोई संसारी प्राणी, रखे भावना निज कल्याणी।
सच्चे देव-शास्त्र-गुरु पूजे, साँचा सम्यग्दर्शन खोजे॥३॥
फिर संसार सुखों से डरकर, जीवन जिये विरागी बनकर।
रत्नत्रय के भाव बनाये, गुरु पद में दीक्षा अपनाये॥४॥
करें तपस्यायें तूफानी, बनकर साँचे ज्ञानी ध्यानी।
तभी ऋद्धियाँ पैर पखारें, सभी सिद्धियाँ राह निहारें॥५॥
लेकिन ऋषिवर निज में रमते, अतः भक्त चरणों में नमते॥
ऋषिराजों की करुणा पाके, दुनियाँ खुश है पर्व मना के॥६॥
ऋषियों का कण-कण है पावन, रत्नत्रय का रिमझिम सावन।
इसमें जो भी भक्त नहायें, रोग शोक दुख दर्द नशायें॥७॥
और कहें क्या इनकी महिमा, झलकाते शुद्धातम गरिमा।
मुक्तिवधू फिर नतनयना हो, करे मोक्ष में वरमाला हो।८॥
यही स्वयंवर हम भी देखें, सो ऋषियों को माथा टेकें॥
'सुव्रत' को ऐसा वर देना, योग्य स्वयंवर के कर देना॥९॥

(सोरठा)

ऋद्धि-सिद्धि साम्राज्य, होते हैं गुणगान से।
भक्त भजें ऋषिराज, करके नमोऽस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल संबंधिनः सर्व मुनिवरेभ्यो समुच्चय जयमाला महार्घ्यं...।

(दोहा)

ऋद्धिधारी मुनिवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, ऋद्धीश्वर मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

आरती

ओम् जय चौसठ ऋद्धि, स्वामी जय चौसठ ऋद्धि।
हम सब करके आरती,२, चाह रहे सिद्धि॥ ओम् जय...
१. चौसठ-चौसठ ऋद्धि, ऋषि जिनके स्वामी। स्वामी ऋषि...
करके तपस्या पायें-२, मुक्तिवधू रानी॥ ओम् जय...
२. ऋद्धि और ऋषिवर, साथ-साथ ऐसे। स्वामी साथ...
जैसे गुण गुणी होते-२, देर रहें कैसे॥ ओम् जय...
३. ऋषि बिन धर्म न टिकता, पाप ना हो रिक्ता। स्वामी पाप...
कौन शास्त्र को लिखता-२, मोक्ष नहीं दिखता॥ ओम् जय...
४. रोग शोक दुख संकट, कर्म हरें संता। स्वामी कर्म...
पाप श्राप विधि हरके-२, करते भगवंता॥ ओम् जय...
५. हम जग से घबराके, ऋद्धि पूज रहे। स्वामी ऋद्धि...
'सुव्रत' ऋषि को पाके-२, सिद्धि खोज रहे॥ ओम् जय...

===